पंजाब केसरी

पंजाब केसरी
SUN,27 MARCH 2022
EDITION: LUDHIANA, PAGE NO. 8

उच्च शिक्षा की स्थिति और भारतीय विद्यार्थी

विद्यार्थी अपने देश में उच्च शिक्षा की सुविधा की कमी के कारण दूसरे देशों का रुख करें तो बात समझ में आती है, मगर भारतीय विद्यार्थी का पढ़ाई के लिए और वह भी इतनी संख्या में बाहर जाना कई मायनों में गले नहीं उतरता। देश में मैडीकल की सीटें पर्याप्त संख्या में होतीं तो हमारे बच्चों को बाहर नहीं जाना पड़ता और देश के पास अच्छी संख्या में काबिल डाक्टर भी होते। जब भारतीय विद्यार्थियों से जुड़ी खबरें लगातार एक के बाद एक सामने आने लगीं, तब से लगभग यह सवाल सभी के जेहन में उठा होगा कि आखिर जिस राष्ट्र को विश्वगुरु कहा जाता था, आज वह शिक्षा के लिए दूसरे देशों पर क्यों निर्भर है।

आबादी के लिहाज से भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है और यहां से हजारों की संख्या में विद्यार्थी मैडीकल की उच्च शिक्षा ग्रहण करने छोटे-छोटे देशों में आखिर क्यों जाते हैं? क्या हमारे देश की उच्च शिक्षा प्रणाली इन देशों की उच्च शिक्षा प्रणाली से कमजोर है? वैसे तो इन सभी सवालों के जवाब मिल ही गए हैं, क्योंकि भारत की तुलना में यदि देखा जाए तो यूक्रेन जैसे छोटे देशों में शिक्षा ग्रहण करना काफी सस्ता है तथा प्रवेश भी काफी आसानी से मिल ही जाता है।

आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के मौके पर भले ही हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हों, इन वर्षों में हमने काफी कुछ हासिल भी किया है, परंतु ऐसा भी क्या है कि हमारे छात्र स्वतंत्र रूप से अपने ही देश में उच्च शिक्षा हासिल नहीं कर सकते। एक तरफ तो आधुनिक सुविधाओं से संपन्न महंगे स्कूलों की संख्या में दिनों-दिन वृद्धि हो रही है और दूसरी तरफ दूर गांव-देहात में आज भी ऐसे सरकारी स्कूल हैं, जिनको ढंकने के लिए छत तक नहीं है या फिर मूलभूत सुविधाओं से कोसों दूर खड़े हैं। अगर उच्च शिक्षा को देखा जाए तो पिछले 2 दशकों में निजी विश्वविद्यालयों की संख्या तो काफी बढ़ी है, परंतु उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में क्या कोई विशेष बदलाव दिखा है, जिससे हम अपने भारतीय होने पर गर्व कर सकें?

प्रि. डा. मोहन लाल शर्मा

हालांकि इसमें कोई दो-राय नहीं है कि चिकित्सा विज्ञान जैसे पाठ्यक्रमों में आंख मूंद कर दाखिला नहीं दिया जा सकता, किंतु ऐसा भी तो नहीं होना चाहिए कि सीट की कमी के कारण उन हजारों विद्यार्थियों को निराश होना पड़े जो हर प्रकार से इस शिक्षा के योग्य हैं। आज के हालातों को देखें तो विद्यार्थी का जीवन चारों तरफ से घेर लिया गया है। अगर किसी विद्यार्थी को एम.बी.बी.एस. में प्रवेश लेना है तो उसे 'नीट' परीक्षा में असंख्य विद्यार्थियों के बीच बहुत अच्छी रैंकिंग हासिल करनी होती है, तब जाकर उसे प्रवेश मिल पाता है। रैंकिंग अच्छी न हो और पैसा भरपूर हो तो कुछ विद्यार्थियों को प्रबंधन कोटे के तहत प्रवेश बड़ी आसानी से मिल जाता है।

ऐसी स्थिति में सीमित आमदनी वाले वर्ग को अपने बच्चों को डाक्टर आदि बनाने के लिए अलग इंतजाम करने पड़ते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के पास डाक्टरी की पढ़ाई करने के लिए चीन, अमरीका, रूस, यूक्रेन आदि देशों में जाने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं होता और उन्हें मजबूरी में अपने सपने साकार करने के लिए विदेशी शिक्षा का सहारा लेना पड़ता है। आज के समय में यदि देखा जाए तो अमरीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्रिटेन आदि देश बड़ी संख्या में भारतीय विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं, जबकि भारत में ही उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले कई बेहतरीन शिक्षण संस्थान हैं, जहां से पढ़ाई करने वालों की बाहरी देशों में अच्छी खासी मांग है। माइक्रोसॉफ्ट हो या नासा, ऐसी सभी जगहों पर भारतीय प्रतिभाओं का खूब बोलबाला है।

हमारे आई.आई.एम., आई.आई.टी. को तो दुनिया भर में काफी सम्मान की नजरों से देखा जाता है। बेंगलूर स्थित इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस को वर्ष 2021 में विश्व के शीर्षस्थ शोध विश्वविद्यालय का दर्जा हासिल हुआ, परंतु जनसंख्या के अनुसार यदि देखा जाए तो हमारे देश में ऐसे गुणवत्तापूर्ण संस्थानों की संख्या काफी न्यून है। सरकारी विश्वविद्यालयों को यदि देखा जाए तो गिने-चुने ही ऐसे विश्वविद्यालय हैं, जिन्होंने अपना औसत स्तर बनाए रखा है।

ऐसे में छात्रों को निजी विश्वविद्यालयों के अलावा कोई अच्छा विकल्प नहीं दिखता, भले ही वे भारी-भरकम फीस ही क्यों न वसूलते हों। उनके पास सभी प्रकार के आधुनिक संसाधन होने के बावजूद भी वे वास्तविक कार्य के लिए खरे नहीं उतरते, जिससे छात्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से कोसों दूर रह जाते हैं। विषयों के चयन के मामले में भी उच्च शिक्षा को हमने काफी जकड़नों में बांध रखा है। बदलते समय के साथ इसे और उदार बनाने की जरूरत है। जिससे उच्च शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव आए।

drmlsharma5@gmail.com